समर बिजय ॥

जिसको

कविराज तीर्थराजजीने महाराज अचलसिंहजी की आज्ञानुसार संस्कृत समरसार से भाषा छन्द प्रबन्धमें उल्था किया ॥

जिसमें

महाराजाओंके समर करने तथा बिजयपानेके दोषगुण बिचारपूर्वक शुभाशुभ ज्योतिषकी रीत्य-नुसार बर्णित हैं ॥

बाजपेयि पं० रामरत्नके प्रबन्धसे

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखानेमें छपा

मई सन् १८९३ ई०

हक तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ इस छापेख़ाने के ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ समरविजय प्रारम्भः ॥

दो० । श्रीगणपतिपदकमलबिन तूछिनछिनछबिछीन ।
रँग्योश्यामरँगमें फिरत मोमन मधुकर दीन १

छप्पै ॥ जयजयजय गुनरूप भूप यदुकुल बलमंडन । भक्तहेत तनुधरत दीह दानव दलखंडन ॥ करि करि विनय अनंत संत चिंतत उर धरि धरि । ताकों सब ब्रजबामरूप पीवत दृगभरिभरि ॥ केहिकाजको तन ब्रजराजबिन भवबाधक संकटहरन । जय दीनबंधु गिरिवरधरन राधावर बंदौंचरन २ ॥ दोहा ॥ पैरत निशिदिन विषयनद मोमन मीननहाथ ॥ प्रेमडोरि वंशीबिना क्यों पाऊं ब्रजनाथ ३ मोकरनी करनीनमन तुम हरि नीरद रूप ॥ बरसत सबपर एकरस गिरिवर सरवर कूप ४ कछु कविता फलमेंलहौं प्रभु सपक्षकरिहेरि ॥ विनापक्ष हरितरुलखै चढ़िफलखात गलेरि ५ ॥ हरिगीत ॥ निज वंशपालन रीतिराहन शालिवाहन साहसी । जिनविक्रमनिसों जीतिविक्रम भौतिविक्रमसोजसी ॥ तिहिवंश में प्रगटयोअनंद तिलोकचंद महीपहै । जिन मारिअ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रिदल राखिदल कियराज जंबूद्वीपहै ॥ तिनको सुलक्ष
ण द्वैजकैसो चंद पृथ्वीचंदहै । जिहि स्वच्छअच्छ न
लच्छ लच्छन नाइशीश नरिंदहै ॥ पुनि देवराइ नरेश
भो यश देशदेशनि जिन वयो । रिपुजीति रीति विवे-
कसों भुवदेवराइ मनोभयो ६ पुनि भयो भैरवँदास भै-
रव पास जासु न छिन तजिय। अरुअरिनको भैरवलगै
घरघरन रनको अरिन किय ॥ ता तनय ताराचन्द
को कविचंदसम नबखानियो । यशुचंद्रिका क्षितिछाइ
निशिदिन मंद चंदहुकोंकियो ॥ पुनि भयोराउ संग्राम
शाहसंग्रामशाहनसोंकियो । गिरिवरनिसे अरिकरिवर-
नि केहरिनज्यों धरिदपटियो ॥ तिनके भयोसुत जगत
जाहिर कनकसिंह नरेश । जासु गुणगणगननको नहिं
पारपावतशेश ॥ तातनयपृथ्वीराज पृथुज्योप्रजापालन
को भयो । दानकरि सनमानकरि किरवानकरि जेहि
यशवयो ॥ पुनिभो पुरंदर सो पुरंदर रच्योविधि कलि-
कालमें । सुरपाल वह नरपाल यह ततकाल लिखिदिय
भालमें ७ पुनिभये मरदनसिंह तिनकी कौन समसरि
करिसकै । जब सुरखड्गकरि कुरुखलखि को पुरुष
धीरज धरिसकै ॥ चढ़त रणमुख शत्रु सनमुख काजु
नहिं शरचापसों । करवाललैकर आपनेदपटै अरिंदनि
दापसों ॥ राउमरदन नंद आनँदकंद पंचकुमारहै । पंच
वानन सहित मानहु पंचवान उदारहै८ ॥ दोहा ॥ तिनमें
अचल नरेश सब गुणगणको दरियाउ ॥ दानमानकिर
वानलखि रीझैकवि कविराउ ९ मरदन रैयाराउके जेठ
और कुमार॥ अचलकृपा अचलेशपर अचलराजुशिर
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भार १० देशबढ़्योदलबलबढ़्यो तनमनबढ़्योलखाइ॥
श्रीअचलेश नरेशको नैननिवहे•सुभाइ ११ ॥ दंडक ॥
वीर बलवान वालपनते अरिंदनिको पठयेपताल पाप
तमको न लेशहै । जाके राजराजत सुमन सब साधु
जन सुमनसरोज कैसे सरससुवेशहै॥ सुंदरविलंदभाल
पूरण प्रतापबढ़्यो जाकीओर देखे और सूझत न वेश
है। फैल्यो चहूंओर देशदेशनिमें तेजपुंज अचल नरेश
मानो दूसरोदिनेशहै १२ आदर अधिकदेत लखि द्वि-
जराजनको आशिषअशेषलेत पूरोपनुकीनोहै । कोटिन
को कौलुदेत तिनकी खबरिलेत भूपरभयोहै पारिजातक
नवीनोहै॥ शत्रुनको भयदेत तिनके हथ्यारलेत ऐसो
महाराज बलदेको दानुदीनोहै । संकरकोहारदेत जीते
जैतपत्रलेत भूपअचलेश बसु देदै जसुलीनोहै १३ ॥
दोहा ॥ एक समय दरबार में बैठे अचलनरेश ॥ गण
मंडित पंडितसकल सोहत मनौं सुरेश १४ ॥ सोरठा ॥
बैठीसभा सुदेश सूरनको मजकूरसुनि ॥ बोले वचन
नरेश जेमन वर्त्ततसर्वदा १५ ॥ नृपउवाच। दोहा ॥ हारि
जीतियह कर्म्मगति सनमुख लरिबोधर्म ॥ सत्यशील
साहससहित ये क्षत्रिनकेकर्म १६ घरीसुधावत समरमग
पगनचलै इहिहेत ॥ विन्ध्यधरी विधिहरिहरी भरीभीर
तजिदेत १७ यहकहि तीरथराजसों पुनि बोले नृपराइ॥
समरसार भाषा हमैं दीजै ग्रंथबनाइ १८ ॥ सोरठा ॥ अ-
मर समर तजिजात समरसार विन समरमैं ॥ आवत
जात लजात समरतजे दुहुलोकमें १९ ॥ त्रिभंगी ॥ रा-
जनिके सासन निकसें जासनसो पुनि तासनकरतवनें।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यह मनमें धरिके राधाहरिके पाइनपरिके तुरतबनै॥ सुनि जै कविपंडित गुणगण मंडित मो मतिखंडित जो न बनै। दूषन जनिदीजो वितहितकीजो सुधकरिलीजो सो न बनै २०॥ दोहा॥ जे चलिहैं चितुलाइके सुधी सरोदयपंथ॥ समरविजय सुखपाइहैं समरविजय पढ़ि ग्रंथ २१ संवत मुनि नभ उरग शशि १८०७ ज्येष्ठशुद्ध रवितीज॥ बयो सुयशफललहनको समरविजयको बीज २२॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमार श्रीअचलसिंहाज्ञया तीरथराजकृते समरविजयोनामप्रथमोप्रकाशः १॥

अथ जयाजय बिचार॥

दोहा॥ वाणी जूको सुमिरिकै देखि सुरोदय पंथ॥ धर्मवन्त राजानिके अर्थ कीजियतु ग्रंथ १ मल्लयुद्ध भट युद्ध पुनि नृप युद्धके काज॥ वादी प्रतिवादी विषय वरणत सब कविराज २ दुहुँ दिशि गणक बिचारिकै कहत विजयके हेत॥ पै निदान यह जानिबो धर्मवन्त कर खेत ३॥ सोरठा॥ जहँ बरदायक रुद्र कविसे समर बिचार दृढ़॥ बूड़े पाप समुद्र रावणसे बलवाननृप ४॥ सवैया॥ कीनो सुरोदय शंकरजू अरु जानत वेई सबै विधि धारन। कोऊ कहूं गुरुलक्ष पढ़ै हित राजनि के जगमें यश कारन॥ नीके विचारिलरै भट एक अनेक अरिन्दनि मारत वारन। आपुनते सब आइ मरैंति परै जिमि दीप पतंग हजारन ५॥ त्रिभंगी॥ दीजो जनि वंचन यह मत रंचन जो पै कंचन भरि बरसै। शारदहि कुथलमें राखें बलमें कोप अनल में वै भरसै॥ तातें मतिवंतनि लखि गुणवंतनि दीजो संतनि प्रभु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परसै। विद्या सुखराशी कल्पलतासी सुफल प्रकाशी जग दरसै ६॥ दोहा॥ अबहौं कहत बिचारिकै सबै जयाजय भेद॥ सुभट श्रवण दै जो सुनै रहै न उरमें खेद ७॥ सोरठा॥ जब दोऊ सरदार रणमहँ सन्मुख जानिये॥ पण्डितकरौबिचार प्रकट नामलै दुहुँनके ८॥ दोहा॥ शुचि ज्ञानी कोमलहृदय सदय शीलमयचारु॥ सुर भूसुर सेवा निपुण तापर सुधै बिचारु ९॥ द्रुतबिलंबित॥ स्वररहै इमि अक्षर भीरमें। शिव कहै जिमि जीव शरीरमें॥ स्वर बिना सब अक्षर क्षीनहै। जल विहीन परे जनु मीनहै १०॥ दोहा॥ समरसारकी रीति सों लीजो समुझि निशंक॥ चक्रसहित हितसो कहौं वर्ण

अथ जयाजयभेद वर्ण स्वर चक्रम्॥

५	३	६	८	९	अंक
अ आ	इ ई उ	ए ऊ	ऐ ओ औ	अं	स्वर
क ख ट ण म य	ग घ च त थ द र ल व ० ०	छ ज ध न श ष	झ ट ठ प फ ब स ह	ड भ ० ०	वर्ण

स्वरके अंक ११॥ छप्पै॥ म य ट ण क ख के पंच संग अ आ स्वर लीजै। घर चल गथ तव दई उइ सहित तीनि गुनीजै॥ ऊए स्वर अरु वर्ण जछ धन षशके रसलहि। अं स्वर अरु डभ वर्ण अंक इनके हित नव कहि॥ ऐ ओ औ स्वर झपटहठ फसब वर्ण मिलि वसु लहे॥ इमि नाम वर्ण इकतीस शिव स्वर अक्षर ग्यारह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहे १२॥ गीतिका ॥ नाम वर्णनिके स्वरनिके अंक संयुत कीजिये। विषमजाके गनेआवे तासु जयकहिदीजिये॥ विषम सम जो दुहुनके तौ दुहुनिको समजानिये। पुनि और चक्र बिचारिकै तब जयाजयहि बखानिये १३॥ अन्यविचार॥ दोहा॥ दुहूनामके अंकजे आठ भाग करि शेषु॥ गगन वेद रस बाण ऋषि रामचन्द्रचष देखु १४ अंकक्रम ००।४।६।५।७।३।१।२ क्रमते इन अंकनबिषे आगे जाको अंक॥ निश्चै वह नृप जीतिहै यह जानो निरशंक १५॥ अन्यचक्र॥ दण्डक॥ ग्यारह ति-

अथजयाजयचक्रमाह॥

६	३	२	४	८	६	९	७	३	००	१	अंक
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	स्वर
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	वर्ण
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	वर्ण
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०	वर्ण

रीछे कोठा ऊरध बनावो पंच रंचन प्रपंचन की बातन पतीजिये। रस गुण नैन वेद वसु रस नन्द ऋषि राम नभ चन्द आदि अवलिनमें कीजिये॥ तातर अकार आदि अक्षर सरस स्वर खण्ड औ विसर्ग परिहरि धरि दीजिये। कादि सब वर्ण और पांतिनमें ङञ बिना दीजै अंत नभ द्वै बिचारि चक्र लीजिये १६॥ चामर॥ चक्रमें निहारि नाम वर्ण अंक लीजिये। वर्णमें बिचारिकै सुरंक युक्त कीजिये॥ द्वादशै घटाइ अष्टभाग शेष कैचुकौ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जासु अंक हीन रंक सो कलंक लैचुकौ १७ ॥ अन्यचक्र ॥ दोहा ॥ अक चट तप यश वर्गके क्रमते अंक बखानि ॥ अष्ट पंच षट वेद नग चंद राम भुजजानि १८ ॥ सोरठा॥ जिन२ वर्गनि आइ नाम वर्ण जिनके परैं ॥ सबै सुरंक मिलाइ तिन तिन के अंकनि बिषे १९ ॥ दोहा ॥ सात भाग लीजै बहुरि शेष रहैं जे अंक ॥ जाकेअधिकी होइँ सो जयपद लहै निशंक २० ॥ अथ जयाजयज्ञानमाह ॥ शोधि जयाजय चक्र सब पुनि याको मत लेहु । जानि परै यामें जो कछु सो निश्चय कहिदेहु ॥ राम चंद युग नैन शशि पंच सुरनिके अंक॥ ककारादि सबवर्ण धरि पूरब

अथवर्णचक्रम् ॥

८	५	६	४	७	१	३	२
अ	क	च	ट	त	प	य	श
अ आ	क	च	ट	त	प	य	श
इ ई	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
उ ऊ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
ए ऐ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ओ औ	०	०	ण	न	म	०	०
अं अः	०	०					

रीति निशंक ॥ नाम बर्ण स्वर अंक लै पंचभाग करि शेष । संधिहोइ सम में अधिक जयपद लहै विशेषि ॥ सबै चक्र अवलोकिकै कहौ जयाजय जानि । जो समतौ सम जानिये रहैं दुवौ भयमानि २१ जो न बनै सरदार को करिबे युद्ध जरूर ॥ तौ सेनापति कीजिये जाहि सबै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बल शूर २२ ॥ सोरठा ॥ कही जयाजय रीति यहि विधि शिव भाषित कछुक ॥ जे मानैं परतीति ते जगमें जय यश लहैं २३ ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीअचलसिंहाज्ञयातीरथराजकृते समरविजये जयाजयविजयवर्णनं नाम द्वितीयप्रकाशः २ ॥

अथ कुलाकुलकथनम् ॥

दोहा ॥ आर्द्रा अंबुप मूल पुनि अभिजित नखत बखानि ॥ षष्ठी दशमी द्वैज तिथि बुध वासर सुखदानि १ ॥ सोरठा ॥ इन्हैं कुलाकुल जानि पण्डित कहत बिचारिकै ॥ समर समय सुखदानि संधिकरैं विग्रह हरै २ ॥ सवैया ॥ पुष्य पुरन्दर पूरबाषाढ़ विशाषा मघा

अथकुलाकुलचक्रम् ॥

कुलाकुल	कुल	अकुल	गणाः
६ । १० २	८ । १२ ४ । १४	१ । ३ । ५ ७ । ११ १३ । १५	तिथयः
बुध	मं· शु·	सू· चं· श· बृ·	वाराः
आ· श· मू· अ भिजित	चि· वि· ज्ये· पू· षा· अ· पू· भा· अ· श्र· कृ· मृ· पुष्य म· उफा·	उ· षा· पुन· रो· ह· स्वा· अनु· रे· ध· पू· फा· भ· श्ले· उ· भा·	नक्षत्राणि

मृग अश्वनी मानिये । उत्तरा आदि को अंत को पूरवा कृत्तिका कर्ण सुचित्रहि आनिये ॥ अष्टमी द्वा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दशी चौथि चतुर्दशी बार धरासुत शुक्र बखानिये। ये कुलहैं गढ़नायकके बलदायक हैं जयदायक जानिये ३ ॥ गीतिका ॥ ऊषा पुनर्वसु रोहिणी कर स्वाति मित्रभ मानिये। रेवती वसु पूरबा यम उरग ऊभा जानिये॥ परिवादि लै सब विषम तिथि रवि सोम शनि गुरु पाइकै। सब कहत जाई बल इन्हैं कबि अकुल गण समुझाइकै ४ ॥ इतिकुलाकुलगणाः ॥ अथपंचस्वरकथनम् ॥ दोहा ॥ राधावर मो मन बसौ मोसों कहत बनैन ॥ मन मेरो शठ चपलहै कैसे करिहै ऐन ५ ॥ सोरठा ॥ जे बिचारिये नित्त सब कारजकी सिद्धि कह। अइउएओमित्त शिव भाषित हैं पंच स्वर ६ ॥ छप्पै ॥ कछ डध भव के ईश प्रथम अआ स्वर लीजै। खज ठन मश रस वर्ण अधिप ईकार गनीजै॥ गत झष पय शुभवर्ण ईश ऊकार गनोजू। घट थफ रस षटवर्ण ईश एकार भनोजू॥ हठ बालचन्दके अधिप लहि कहि ओकार उदारउर। इहि भांति गणक सब कहतहैं तीस वरण सँग पंचसुर ७॥ अथतिथीश ॥ दोहा॥ नन्दापुनि भद्रा जया रिक्तापूरणजानि॥ क्रमते इन तिथि सबनिके अकारादि प्रभुजानि ८ ॥ ताटक ॥ इनको जब अन्तर भोगकरौ। तिथिमें तब ग्यारह भाग हरौ॥ जो लहौ घटिकापल ताहि धरौ। स्वर अन्तर भोग विचारकरौ ९ ॥ तोमर ॥ लहि पंचघटिका मित्त। पल सप्तविंशति नित्त॥ यह जानि प्रति स्वर भोग। सब कहत पण्डितलोग १० ॥ अथवारेश ॥ नराच ॥ भौम मार्तण्डको विचारिये अकार ईश। इन्दुइन्दुसूनुको इकार सर्वदा अधीश॥ जीवको उकार ईश शुक्रये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सदानरेश। मन्दकेअधीश ओकहेमहेश वासरेश११॥ अथराशीश ॥ मेषालि सिंह कोहै। स्वामी अकार सोहै॥ पुनि मिथुन कर्क कन्या। ईकार ईश धन्या॥ धनमीन के विराजै। उकार सुखनि साजै॥ तुल ब्रषभ दुवो रासी। एकार आनिगासी १२ मृगकुंभ एकही है। ओकार ने लही हैं॥ इहि भांति जानि लीजै। स्वर देखि काजकीजै १३॥ अथनवांशेश ॥ दोहा॥ राशिनकेनवमांशसब कहे एकसै आठ॥ ज्योतिष ग्रन्थ विचारिकै करे कोविदन पाठ १४ तामेंचौबिस अंशको हैअकार प्रभुमानि। ईकारादिक चारिके इकइस लीजै जानि १५॥ कबित्त॥ अजब्रष पूरण मिथुनके नवांश षट गनि लीजै चौबिस के अधिप अकारहै। मिथुनके तीन छीन कर्क हरि पूरे पीन अंश इकईस ईश इनको इकारहै॥ कन्या तुल ब्रइिचकति अंशलों उकार जानो ब्रश्चिक षडंश धन मृग ये अधारहै। मकरकै बाकी कुम्भ मीन ओ बिचारि देखो नीतिइहिरीति पारावारवारापारहै १६॥ अथनक्षत्रेश॥ झूलना॥ रेवती आदि शुभ सप्तनक्षत्रको जानियेअधिप अकारसोहै। स्वच्छईकारगुनि अदितितें तारकापंच कोईश शिवसंगजोहै॥ उत्तरा आदिकीतेंउकों पंचपुनि मित्रतें पंचएकारलोहै। कर्णतें पंचनक्षत्र ओकारके पंचस्वर भेद कहिसकतकोहै १७॥ संवत्सरेश॥ दोहा॥ प्रभवादिक संवत्सकल अकारादि स्वरपंच। द्वादशद्वादश पाइयो क्रमतेतजो प्रपंच १८॥ अथऋतुईश॥ तारक॥ ऋतु भोग तिहत्तरि द्योसकहै सब। तिनको निरधारकहौं सुनिये अब। पुनितामहँ ग्यारहसों हरियेजब। सुरअं-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तरभोगकहैं सिगरे तब १९ ॥ अथ अयनेश ॥ दोहा ॥ दक्षिण अयन अकारप्रभु उत्तर अयन इकार ॥ एकादशके भागते अन्तर भोगाबिचार २० ॥ अथ मासेश ॥ सोरठा ॥ इनके ईश अकारमारगमाधवभाद्रपद ॥ कहियेअधिपइकारश्रावण क्कारअसाढ़के २१ ॥ चौपाई ॥ मधुअरु पौषमासहैं ऊके । येप्रभु जेठ कार्तिकदूके ॥ माघ फाल्गुनओ के कहौ । ग्यारहसोंहरि अंतरुलहौ २२ ॥ अथ पक्षेश ॥ कृष्णपक्षको अधिपुअकार । ईसितपक्षकीनआगार ॥ इहिप्रकारवर्णे स्वरचक्र । समुझिलीजियोहै अतिबक्र २३ ॥ अथ स्वरनामानि ॥ चामर ॥ बालहैकुमारयून वृद्धमृत्युपञ्च जानि । नामये अकार आदि पंचईशके बखानि ॥ बालमें कछूकलाभ

अथ पञ्चस्वर चक्रम् ॥

बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत्यु	नाम
अ	ई	उ	ए	ओ	स्वराः
क छ ड ध भ व	ख ज ढ भ भ श	ग त द ष प य	घ ट थ फ र स	ह ठ व ल च द	वर्णाः
१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	तिथयः
सू· भौ·	चं·बु·	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
मे· वृ· सिं·	मि· क· क·	ध· मी·	तु· वृष	म· कुं·	राशयः
२४	२१	२१	२१	२१	अंशाः
रे· अ· भ· कृ·रो·मृ·आ·	पु· पु· श्ले. म· पू·	उ· ह· चि· स्वा· वि·	अ· ज्ये· मू· पू· उ·	अ· ध· श· पू· उ·	नक्षत्राणि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्र· वि· शु· प्र· प्र· अ· श्री· भा· पु· धा· ई· व·					संवत्सराणि
बसंत १३	ग्रीष्म २६	बर्षा ३९	शरद ५२	शिशिर २	ऋतवः
दक्षिणायन	उत्तरायण	० ०	० ०	० ०	अयनः
बै· अग· भादौं	श्रा. क्वारआषाढ़	चै· पौ·	ज्येष्ठ का·	मा· फा·	मासाः
कृष्णपक्ष	सितपक्ष	० ०	० ०	० ०	पक्षः

अर्द्धलाभदाकुमार। यूनसर्वसिद्धिदा जराजुराकरै विकार २४ ॥ दोहा ॥ नामआदिको बर्णजहँ जास्वरके तरहोइ ॥ सोईताको बालस्वर पुनिक्रमते सबजोइ २५ ॥ सोरठा ॥ तादिनकीजैयुद्ध जादिनरिपुको मृत्युस्वर ॥ कहैं सुकबि मतिशुद्ध वर्णस्वरकोबलयहै २६ ॥ अथ मातृकास्वर ॥ चौपाई ॥ नामआदिको बर्णबिचारौ। वामें मिश्रितस्वर निरधारौ ॥ सोई मत्तास्वर उरधरिये। यंत्रमंत्रसब साधनकरिये ॥ प्रथमबरण केवलस्वरहोइ। तौ या बिधिजानो सबकोइ ॥ आदिबर्णतजिदूजोलीजै। पुनिमत्तास्वरप्रगटकहीजै २७ ॥ अथ जीवस्वर ॥ गीतिका ॥ आठवर्ग समानधरिकरि अंक संख्या लीजिये। अंकषोड़श ह्वैनिशंक अवर्गके धरिदीजिये ॥ ककारादिक पांचकेकबि पाँचपाँच गनाइयै। चारिचारि बिचारिकै जसबर्गके ठहराइयै २८ स्वरबर्ण जाकेनामके सबजौनिबर्गनिमें परै। तौनिबर्गनिकेसुको-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ बर्गांक चक्रम् ॥

१६	५	५	५	५	५	४	४	अंक:
अ	क	च	ट	त	प	य	श	बर्गा:
अआ इई	क	च	ट	त	प	य	श	बर्णानि
उ ऊ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	
ए ऐ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	
ओ औ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	
अं अ:	ङ	ञ	ण	न	म	०	०:०	००

विद्जोरि अंकनिकोंधरै ॥ पाँचकोलै भागवाकीजीवस्वर इमिजानियो । कीजिये शुभकाज सिगरे सिद्धिदाइक मानियो २९ ॥ अथ पिंडस्वर ॥ दोहा ॥ मत्तास्वर अरुबर्ण स्वर संख्याकरि एकत्र । पाँचभागदै जोरिये पिंडस्वरसु पवित्र ३० यासुरमें नृपसुभटलै साजिसैन चतुरंग । दुंदुभि धुनिसुनि अरिनकी चमूचलै तजिसंग ३१ ॥ अथ ग्रहस्वर ॥ दोहा ॥ जन्मराशि स्वामीखचर ताको जोस्वरई-श । सोईग्रह स्वरहोतहै भाषत आपुगिरीश ३२ ॥ अथ नक्षत्रराशिस्वर ॥ जन्मराशिको ईशस्वर राशिस्वरसोजानि ॥ जन्मऋक्षको अधिपजो सो ऋक्षस्वरमानि ३३ ॥ अथ योगस्वर ॥ कबित्त ॥ बर्णस्वर मत्तास्वर ग्रहस्वर जीवस्वरराशि औनक्षत्रस्वर योगस्वर कहैकबि । पिंडस्वरजोरिअंक सं-ख्याइकठौरकीजै लीजैपंचभागकहिदीजैस्वरयोगीतब । यामें योगसाधन अराधन सुदेवताको करौ सिद्धिहोइ थिरह्वैकैएकचित्तजब ॥ रंचमतिमेरीपंचसुरकोअपारभेद कह्योहै कछूकसुनौ भूवल सकलअब ३४ ॥ दोहा ॥ इ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हिप्रकार स्वरआठये समुझौ सकलसुजान ॥ है विशेष युद्धादिकनिवर्णस्वर बलवान ३५ ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीअचलसिंहाज्ञया तीरथराजकृतेसमरविजये पञ्चस्वरबर्णनंनामतृतीयप्रकाशः ३ ॥

अथ भूवलसाधनम् ॥

विजय॥ पूरबतेंदिशिचारि बिचारिधरौ स्वरबर्णनि आदिअकारतें । मध्यलिखौ स्वरपंचम सुन्दर दक्षिणमारगके अनुसारतें ॥ होइयुवास्वरमेंजय जाहिरघाइलकै स्वरबालकुमारतें । मृत्युजरा फलनाम समानकह्योसुर भूवल यापरकारतें १ ॥ अथ चंद्रहतराशयः॥पद्धटिका ॥ ग्रह

अथस्वरदिग्बलचक्रम् ॥

ई·	अ·पू	आ
ए·उ·	औ	इ·द.
वा	उ·प	नै·

ईश दिशाते धरिसुजान । निजराशि सहितक्रमसों बखान ॥ सित- भौममंद रविगुरुवदारु ।कहिचन्द चन्दसुत जीवचारु ॥ जिहि वारजोरदिशि जौनिलग्न । जनिजाहु भूलिशशि करतभग्न ॥ इहिभांति चन्दहतराशिजानि । शुभअर्थनिको असमर्थ मानि२

अथ जयाजयचक्रम् ॥

३	१	४	२	१
अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

अथ रविहतदिशा ॥ कबित्त ॥ षष्ठयाम अर्द्धआदिलेकै एकयामभरि पूरबदिशाको करेपतन प्रचण्डहै। रातिके चतुर्थ अर्द्धयामतेलौ यामभरि अन्तक दिशाको अन्तकरै मार्त्तंडहै ॥ अर्द्धयाम दूसरेते कहर पहरएक वारुणी दिशापैरविअधिकउदण्ड है ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुर्ययामखण्डते प्रचंडएकयाम लौंहै उत्तरदिशापैजाकी दीपति अखण्डहै ३ ॥ दोहा ॥ दिनकर दग्धदिशाकही लीजो सुमतिबिचारि ॥ सन्मुखइन्हैं बचाइयो जबबाजै तरवारि ४ ॥ अथ चंद्रहतदिशा॥पद्धटिका ॥ कहिप्रथम यामबृष कुम्भलग्न । शशि शम्भुदिशाकों करतभग्न ॥ पुनि दुतिययाम दिशि अग्निजानि । अरुअंतक हरिमृग लग्नमानि॥ नितकरैइन्हैं रजनीशघात । लीजोबिचारि नृपसमरजात ॥ दिशि निऋतियाम तीसरसमेत । नित हनतनिशाकरधननिकेत ५ पुनितुर्य्ययाम दिशिपवन मित्त । बुधराशिहनत बुधजनकनित्त ॥ जेहिदिशाहनत द्विजराजवान । जयहेतनृपति जैयेतहान ६ ॥ अथगूढाख्याराहु ॥ बिजया ॥ तमगूढबड़ो बलदाइकहै बलयाके कहौंसुनिये चितुलाइकै । यहचारिघटी दिशिबासरहै निशिबासरहै क्रमयाको सुभाइकै ॥ अग्निदिशा ते चले

शुक्र २।७	भौम १।८	मंद १०।११
गुरु ६।१२	दिशा चक्र	रबि ५
बुध ६।३	चंद्र ४	गुरु ६।१२

पुनि उत्तरराक्षस पूरुबवायु बहाइकै । दक्षिणशम्भु प्रतीचीहनै न गनै दिशिकाहू की कोटिउपाइकै७॥ दोहा ॥ गमनसमै सनमुख सुखद रनमुख सनमुख त्याग ॥

अथ गूढाख्य नाम राहु चक्रम् ॥ गूढराहुताड़ितदिशा इनते

अ	उ	नै	पू	वा	द	ई	प	दिशा
४	४	४	४	४	४	४	४	घटी

दूरिहि भाग ८ ॥ अथ छाया बल ॥ तोटक ॥ निजछाया सबैजनजानतहैं । बलसनमुख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाम बखानतहै ॥ जयजाईलहै अरुथाईलहै। इहिभांतिसबै कबिराजकहै ६ स्वरदाहिने में जबवायुबहै। जयजाईलहै यहजाहिरहै ॥ स्वरनासिका बामबहैजबहीं। जयथाईलहै रणमें तबहीं १० ॥ दोहा ॥ दिनकी छाया बलकही इनकीहै यहरीति ॥ अबनिशिबल फलकहत हौंसुनौ सुकबिकरिप्रीति ११ ॥ अथ रात्रिछायाबल ॥ दोहा ॥ निशि परिछाहीं पीठिपर बलीदाहिनीओर ॥ जयजाई थाईलहैकहैसुकबिशिरमोर १२ जयपावैजाईबहैजोनासा पुटबाम ॥ दक्षिणस्वर थाईलहै रहैनरिपुकोनाम १३ ॥ अथ चंद्रबल ॥ चौपाई ॥ पूरुबउत्तरमें रजनीश। थाईजय पदलहैमहीश ॥ दक्षिण पश्चिममें जबचंद। तबजयजाई लहै अनन्द १४ ॥ अथवायुबल ॥ होइ समीर पीठिपर जाके। रहै न अरिगण सनमुख ताके ॥ वायु दाहिनी सब सुखदायक। सनमुख बाम तजौ नरनायक १५ ॥ अथचतुर्घटिकाराहु। विजया ॥ गनि पूरबते छठईं छठईं दिशि चारि घरी स्वर भानु रहै। दिनमें तजि सन्मुख बाम इन्हें क्षणमें रणमें जय भूप लहै ॥ निशिमें दिशि पश्चिम ते गनिये जनिये पछिली सब रीति वहै। नित दक्षिण मारग ह्वै निकसै निशि घोससबै कविराज कहै १६ ॥

अथ चतुर्घटिका राहुचक्रम् ॥

पू	वा	द	ई	प	आ	उ	नै	दिनबल
४	४	४	४	४	४	४	४	घटी
प	आ	उ	नै	पू	वा	द	ई	रात्रिबल
४	४	४	४	४	४	४	४	घटी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ द्विघटिकाराहु ॥ दोहा ॥ ईशदिशाते द्वैघरी रहैदिशाप्रति राहु ॥ चौथीचौथी दिशनिमें तहां भूलि जनि जाहु १७ यहि विधि निशि दिन भ्रमत तम जानोंसकल सुजान॥ पीछू दाहिन दै लरौ हरौ रिपुनके प्रान १८ ॥ अथयोगिनी

अथद्विघटिकाराहुचक्रम् ॥

ई	द	वा	पू	नै	उ	आ	प	दिशा
४	४	४	४	४	४	४	४	घटी

बल ॥ मदिरा ॥ पूरब उत्तर अग्नि निशाचर दक्षिण पश्चिम वायु इशानमें। आदिते मावस लौं दुइबेर फिरे क्रमसों इमि आठ दिशानमें ॥ योगिनी अंतर भोगकहै कवि यामके अर्द्ध रहै इकथानमें। सन्मुखबाम विहायलरै तिफिरै अरिको पहुँचाय मशानमें १९॥ दोहा ॥ दिन निशिप्रति दिशिवार द्वै योगिनि करै अराम॥राजनिके हित कहतहौं सुनिये तिनकेनाम २० ॥ अथयोगिनीनाम ॥ दोहा ॥ ब्रह्माणी कौमारिका बाराही उर आनि ॥ इन्द्राणी पुनि वैष्णवी और चण्डिका जानि२१ माहेश्वरीबखानिये महालक्ष्मी आठ॥ आगमतंत्रविचारिकै करौ कोविदनपाठ२२ राहु योगिनी जोप्रबल थोरेसुभट समाज॥ गनैन अतिकरिवरन ज्यों हनै एक मृगराज२३ ॥ अथक्षेत्रपालीभमि ॥ पद्धटिका ॥ मधु मारगशिर सावन उदार। दिशि पूरबमें करती अगार॥ शुचि फागुन कातिकमें विलास। दिशि दक्षिण देवी करति बास २४ पुनि ज्येष्ठमाघ आश्विन अखण्ड। शुभ पश्चिममें देवी प्रचण्ड॥ बैशाख पौष भादौंसमेत। दिशि उत्तर निशि दिन अभय देत२५इहि भांति गनत सब खण्ड खण्ड। बलजानि क्षेत्रपाली अखण्ड॥ अब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहत दिशा प्रति याम याम । बिन याहि ओर आवै न
काम २६ ॥ दोहा ॥ दक्षिण गति रवि दिशि निज दिशिते
सुखपाइ॥ क्रमसों अह निशि पृष्ठि पर याम
यामप्रतिजाइ २७ ज- यदा दक्षिण पृष्ठि है
सकल कविरा बलको शिर-
ताज॥ सब ब- लयाबल बि-
न अबलकाज २८ ॥

	पू० बै० आ० मार्ग	
उ० वै० पौ० भा०	क्षेत्रपाली भूमि	द० फा० का० आषाढ
	प० ज्ये० मा० क्वा०	

अथ एकवीरा ॥ बसन्ततिलक ॥
ईशान पश्चिम धनंजय द्रव्यपालं । नैऋत्य पू-
रब दिशा पुनि पौन कालं ॥ ईशांबु पावक कुबेर दिशानि
धीरा । चैत्रादि मास क्रमसोंगनि एक वीरा २९॥ चौपाइ ॥
एकमास प्रति दिशि यह रहै । भूसुर सकल भूमि बल
कहै ॥ दक्षिण पीठि देइ जो लरिये । तौ क्षणमें अरिगण
बश करिये ३० ॥ अथमहामारीभूमि ॥ दण्डक ॥ अजके दिनेश
ते पुरन्दरादि दिशाआठ क्रमसों बिचारौ महामारी के
प्रभायको । कोननिमें मास द्वै द्वै करती निवासभले चलै

बाम मारग के सुखद सुभाय
को ॥ दिन प्रति दिशामें अ-
ढ़ाइ घरी बास जाको विदिशा
में पांचघरी सबके बनायको ।
जाकी पीठि हाथ ताहि करती
सनाथ इन्हैं कैसे करि लीजै
बाम सन्मुख सहायको ३१ ॥

अथसंघट्टचक्रम् ॥ दण्डक ॥ तिरछी समान उभीं नव नव रेखा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

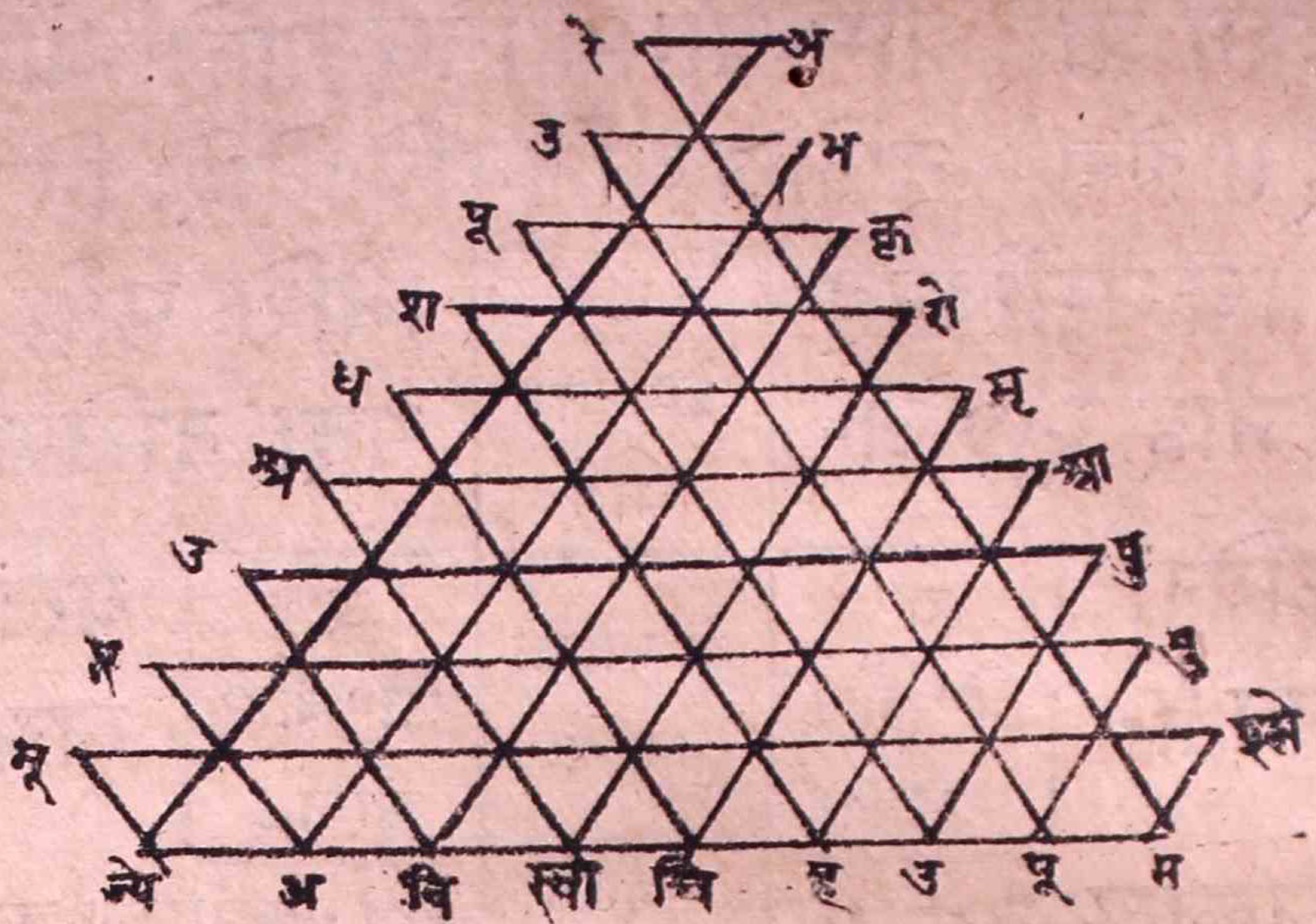

खांचि अश्विनी दै आदि तारा सताईस धरियै। फेरि नवग्रहको बसाइ जहां जाहि रुचै निजनिज राशिन के बेध निरधरियै ॥ बिन याके बेधकहूं काहू युद्धहोतसुन्यो यह सँहारचक्र अवलोकन करियै। शुभग्रह बेधते न समर सलाह होत क्रूरग्रह बेधभये सैनपरिहरियै ३२॥ अथलोहपात ॥ तोटक ॥ तिथि जोरिसबै शरसों गुनियै। पुनि ऋक्ष मिलाइ कहौं सुनियै ॥ कहि तामहिं तीनिकोभाग लहौं। सब याविधि लोहनिपातकहौं ३३॥ दोहा ॥ एक बचे जललोकमें द्वैथल तीनिअकास॥ लोहपातजानत सकलतीनिलोकमेंबास३४॥ अथनारदबास ॥ संयुता॥ सुकुलादि तिथि गनिलीजिये। गतवारसंयुतकीजिये॥ लैभाग तामहँ तीनिको। सबकहतबास मुनीनको ३५ इक शेष जो सुर ओकमें। दुइके बचे नरलोकमें॥ कहि शून्य बाकीजो रहै। पातालमें तब सबकहै ३६ इहिभांति नारद जानिये। जहँ होइ क्यों कल मानिये ३७॥ अथअर्द्ध याम ॥ दण्डक ॥ बसु शिव नैनरस भूमि वेद मुनिकर लीजो रवि वासरते क्रमसों जनाय याम। नाम जनि लीजो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इन यामनिके अर्द्धयाम यमके कहतसबै आवत न काहू काम ॥ और मत रवि आदि येऊ याम जानि बहै नैन नग वेद बाण कुंजर दरश शम। भौनते सनेहछाड़ि इन में जेगौनकरै आपुको वेसुन्दर यमालय बनावैंधाम३८॥

अथकालबिचार ॥ सवैया ॥ बासरके पति पूरुबमें क्रमते ग्रह और सबै धरि दीजिये। दक्षिण मारग जादिशि मांझ दिवाकरसूनु जहां लखि लीजिये॥ याहि सबै कवि कोविद जानत काल कहै कबहूं न पतीजिये। चारि घरी परभात समै जब सन्मुखहोत पयान न कीजिये ३९॥

अथहोराबिचार ॥ दोहा ॥ आदि अन्त पायो न जब उरमेंधरि शिव कोप ॥ अहोरात्र होरा कह्योकरै वर्ण द्वै लोप ४० गतघटिका पल लीजिये जबते लागै बार ॥ दूनी करि हरि पांचसों होरा कहैउदार ४१ रवि उशना बुध चन्द पुनि मन्द जीव कुज जानि॥ बारयते होरालहै या क्रम सों ग्रह मानि ४२ होइ अधिप रिपु राशिको जो खेचर बलवन्त। ताकी होरा परि हरौ भाषत पूरणसन्त ४३॥

अथप्रहरस्थलानि ॥ नाराच ॥ जो बनै न अर्द्ध याम तौ प्रहार बाम अंग। जो विगूढ़ राहुहोइ अर्द्ध ऊर्द्ध अंग भंग॥ जौ विरुद्ध राहुतौ उरोज घाइकोकरै। विरुद्धमार्तंड श्रौन शीशको सदा हरै ४४॥ दोधक ॥ रजनीश विरुद्ध भये सुनिये। मुखऔ भुजघातसदा गुनिये॥ रिपुहोरा अधीशकहैंसिगरै। हृदयाननकोपरिहारकरै ४५ जबतौरणमें तरवारिपरै। तब और बिचारकछून करै॥ कहिये इन ठौरन घाइलहै। दैवज्ञ सबै इहि भांतिकहै ४६॥ अथग्रह तिथ्याः शचोप्रहारमाह ॥ पद्धटिका ॥ निज जन्म राशिवा जन्म

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लग्न । रवि परैकरै अरिशीशभग्न ॥ द्विजराज बारहें
होइजासु । अरिआननको तबहनत आसु ४७ जोभूमि
पुत्रगेरहें निकेत । उर आनन इनके घाइदेत ॥ शशि
सूनुपरैजोदशमआइ । अरिकुचथलमेंतबहोतघाइ ४८
गुरुनवमकरै जाके निवास । उरहनत शत्रुको करि प्र-
कास ॥ जोभृगुसुत अष्टम करैथान । गुददेश शत्रुके
लगतबान ४९ समरसमयशनि जोचतुर्थ । तबकरैमहा
रिपुको अनर्थ ॥ पञ्चम निवास जोकरै राहु । तौप्रगट
जानि अरिभुजनि दाहु ५० षष्ठम निकेत जोपरतकेत ।
अरिमूलस्थलमें घाइलेत ॥ ग्रहबस्तुहोइ जो द्वितिय
भौन । क्षतकरै सुहियकाननसुकौन ५१ ग्रहसूनुनामजो
तृतियहोइ । अरिको प्रहार कहिकंट जोइ ॥ ग्रहकाल
नामसप्तम अवास । कहिरिपुको तबयमपुर निवास ५२
शिवकहे प्रहार स्थलइतेक । समुझौ सबरे करिकरिबि
बेक५३ ॥ दोहा ॥ सुनियतजेठेपुत्रकी जन्मलग्नकोईश ॥
सूनुनामग्रहकहतहैं जेपाढ़िदेतअशीश ५४ ग्रहप्रवेशजा
लग्नमें कीनोपरम पवित्र ॥ ताकोअधिपतिजानिये वास्तु
ग्रहसुबिचित्र ५५ निजजन्मस्थित लग्नते अष्टमपतिप
हिचानि ॥ कालनामतासोंकहतसबैगणकहितमानि५६ ॥
अथउरगचक्रम् ॥ दोहा ॥ धरिये शिवके नखतते करिये पाँती

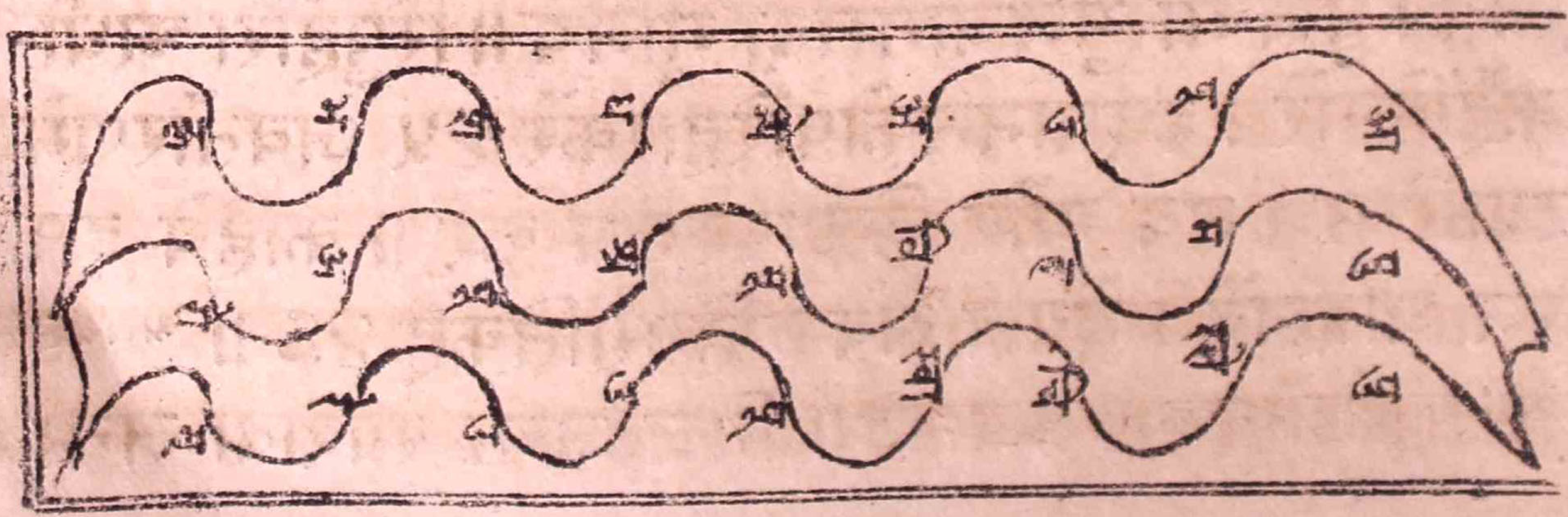

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीनि ॥ क्रमउत क्रमसों सबनखत जानहुँ बुद्धिप्रबीन ५७ उरगचक्र याको कहत सिगरे पण्डितराइ ॥ जो जयचाहे समर में तीजो बेध बचाइ ५८ रजनीकर दिनकर नखत नामनखत पुनिहोइ ॥ एकपांति में परिहरौसमरकरौसबकोइ ५९ ॥ अथदिक्शूल ॥ मोटनक छन्द ॥ दिशिपूरुब को तजिये शनिचन्दहि । तजिदक्षिणको गुरुआनँद कन्दहि ॥ रबिशुक्रहि पश्चिमको तजियै। बुध मंगर उत्तर नाचलियै ६० ॥ सोरठा ॥ यहदिकशूल बिचार अर्द्धयाममें जानिये ॥ जय चाहै सरदारतजिये सनमुख समरमें ६१ ॥ अथस्वस्वभुज्यमाननक्षत्रेशिवन्योदिसप्रविंशतिनक्षत्राणामन्तर्भोगमाह ॥ चामर ॥ भुक्तनाडि का नक्षत्रकी सुनौ गुनीकरौ । ईशयों कहै बिचारि भाग बीस को हरौ ॥ लब्ध पाइये जितेक भुक्तभानि जानिये । शेष अंकते निशंक वर्त्तमानमानिये ६२ ॥ दोहा ॥ याबिधि दिनकर आदिग्रह भुक्तनखततेजानि॥सप्तविंशनक्षत्रको गनोभोग मनमानि ६३ साठिअंशगतिकेकरौ भोगघरी परिमान ॥ सुरवारनको मतयहै जानो बुद्धिनिधान६४॥ इतितत्कालचन्द्रानयनम्॥ अथराहुकालानलचक्रम्॥ दंडक॥तेरहतजिजे रजनीशबधूस्वरभानुपाइसुखपाइरजनीशकह्योजीवपक्ष। चाहतहै भोगकर्यो तेरहतमसिताराकछू दुखपाइकै दिनेश कह्यो मृतपक्ष ॥ आसनजमाइजहाँबैठे मासआठक लौं कर्त्तरीनखतताहि गनतगनकस्वक्ष । पन्द्रहौं नखत ग्रस्त नामकहै परतक्षवहै जयपावैराहु कालानलजाकी पक्ष ६५ ॥ दोहा ॥ जीवपक्षरजनीशप्रभु जाईकोजयजानि ॥ दूजीपक्षदिनेशकीथाईकोबलदानि ६६ मृतकपक्षते

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ग्रस्तअरु कछूकहै बलवान ॥ ग्रस्तनष्टततकर्मकीजाने सुखदसुजान ६७ ॥ अथहोढ़ाचक्रम् ॥ तिरछेकोठापाँचकरि ऊरधकोठाबीश ॥ अवकहडामटपरतपुनि नयभजखा कहिईश। गसदचलाये अंकधरि ऊरधकोठाबीश ६८ इडएओसुरचारिको अन्तइन्हैंधरिदेहु। मिलितकरिसुर अंकको सबकोठाभरिलेहु ६९ घङछकुसंगघरिमध्यमेष णाठपु सिंगहितमानि ॥ भूसंगधफटकहै सुकविदूसगभ थक्षबखानि ७० कृत्तिकादिअभिजितसहित अवकहडा कहिदेउ ॥ चारिचरननक्षत्रप्रति चारिवर्णगनिलेउ ७१ इहिबिधिहोढ़ाचक्रपर नामधरौसबकोइ ॥ हंससारकीउक्तिलै सुरबलकहोसमोइ ७२ ॥ इतिश्रीमहाराजकुमार श्रीअचलसिंहाज्ञयातीर्थराजकृते समरविजये भूबलसाधनन्नामचतुर्थप्रकाशः ४ ॥

गीतिका ॥ सकल मुनिगणकहत या विधि अष्टदलको भरतहै। पंचतत्त्व प्रमान निजनिज आइ श्वासनि धरत है ॥ तीसश्वास अकासतत्त्व बहै सुमिलित कहतहै। साठिश्वास समीरतत्त्व अधीरऊरध बहतहै १ श्वासनघ अन्तरिनगति बहतअनल बखानिये। एकशत अरु बीसकेजलके बहत अधगति जानिये ॥ मन्दबहत बसुन्धराके डेढ़सै कबिकहतहै। भूमिते बिपरीति ह्वै पुनि तत्त्व पाँचौ चलतिहै २ इहिभांति बसैश्वास संयुतएक पत्रहि भरतहै। शतबहत्तरिश्वास सिगरे अष्टदल में धरतहै ॥ निशिद्योसमें भ्रमतीनिजानहु अष्टदलपरहोतहै। छसै इकइस सहसश्वासा रैनिदिवस उदोतहै ३ इहिप्रकार अकारबिन कछुकहतनाहीं बनतहै। कछुक

छायापाइकै इमिसिद्धिजन कहुँगनतहै ॥ पत्रपुरुबमेंबहै जब आइप्राण समीरहै । तब होतमन संग्रामपरयों कहत पण्डित धीरहै ४ जबहोत दक्षिण पत्रपर तबक्रोध मन उपजावई । परसहोत कृशानु दिशिपर छरसभोजन

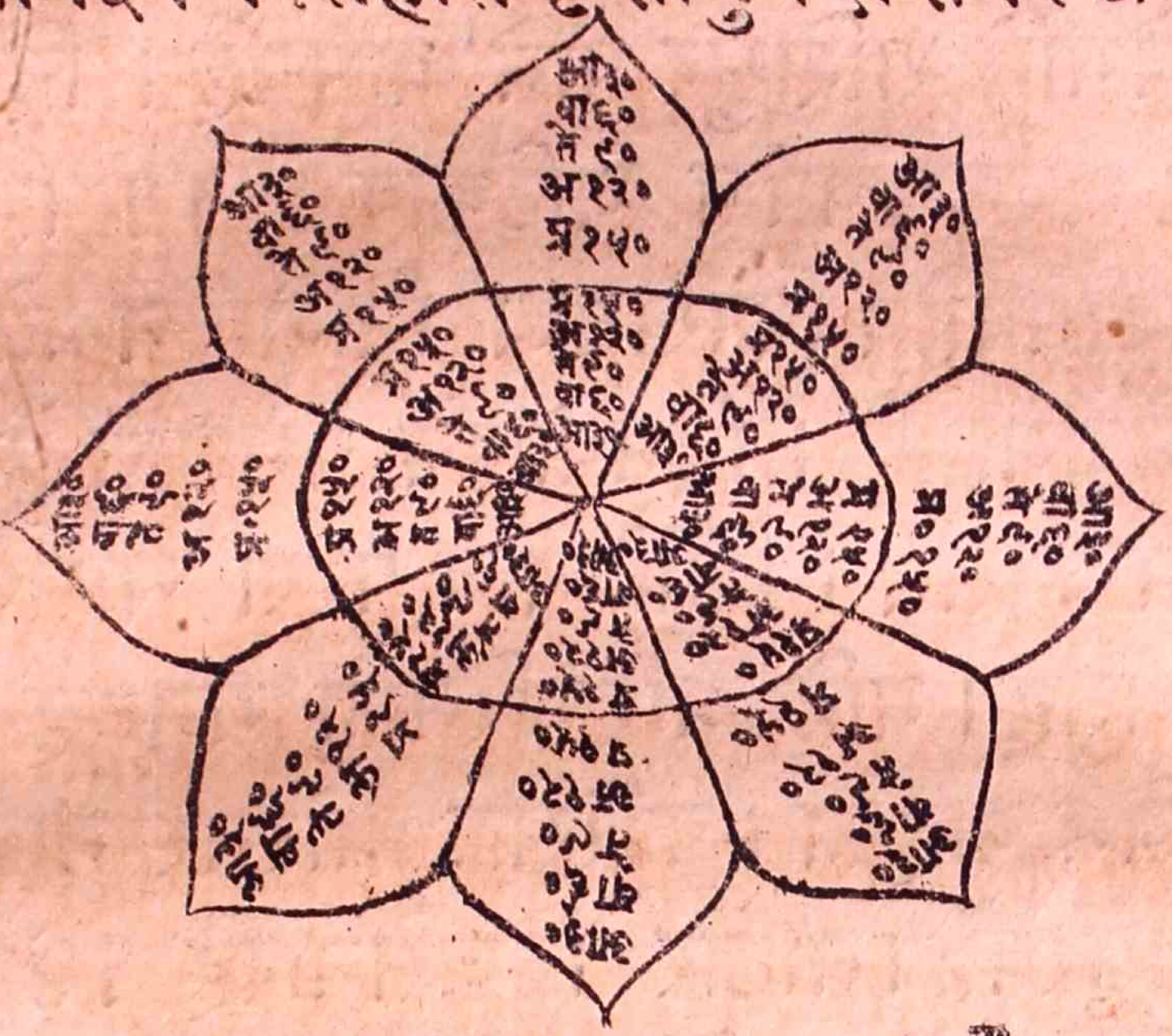

भावई ॥ नैऋति दिशिके पत्रमें बिषयादिको तब चितु चलै । बारुणी दिशिजाइ आनन्द पाइकै सबदुखदलै ५ पौन दिशिकरिभौनबैठे गोनको चितु करतुहै ॥ ईशदिशिके पत्रमें जब प्राणवायु प्रचण्डहै । होतजन जन भूपसब तबदेत मनमन दण्डहै ६ पत्रदुइके मध्यमेंजब बहातिप्राण समीरहै । होत आनँद मित्रलखि ज्योंमिटत उरकीपीरहै ॥ भूमिजल शुभतत्त्व दोऊ तेजु मध्यम लहतुहै । वायुनभये दुखदाता स्वरविज्ञाताकहतुहै ७॥ सोरठा॥ फिरत सदारविचन्द हृदयकमलके दलनिमें ॥ क्रमते आनँदकन्द द्वैदल रबिद्वै चन्दपुनि ८ पंचघटी परिमान कीनो द्वैद्वै दलनिको ॥ घटिका इहै निदान प्राणतीनिसै साठिकी ९ जितनी होतिबिलम्ब दशगुरु अक्षरको पढ़त ॥ यहैप्राण जगदम्ब पहिले शंकर मुख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुन्यो १० ॥ छप्पै ॥ शुक्लपक्षमें प्रथमपंच घटिका शशि जानौं। तापीछे रविघरी पंच निशिद्योस बखानौं ॥ या बिधिसों दिनतीनि फेरिरबि चन्दलहत है। वानवान घटिकानिजानि कबिराज कहत हैं॥ गनिअसित पक्षमें आदि रबिभानि शशिसुर पुनि क्रमयहै। दिनतीनितीनिपरबीनि सबसुपंचपंच घटिकाकहै ११ ॥ संयुता ॥ रविचन्दनाडीमेंबहै। शिखितत्त्व निशिदिन जोरहै॥ वह जानिये निजमानहै। दिनपाँचयें यमथान है १२ रवि नाडिका में जासमै। शिखितत्त्व पूरण सासमै॥ इककै शरीलों हनतुहै। नहिं अरिकरिनको गनतुहै १३ जिहि ओर सुरबिन बाहको। करिसैन अरिनर नाहको॥ जो ओर पूरणसुरबहै। ताठौर निजसेनारहै १४ करिसमौ ऐसो पाइये। अरि मारि मारि भगाइये॥ अरि होइ प्रबलप्रचंड अति। करिखण्डखण्ड अखण्डमति १५॥ दोहा॥ इहि बिधिसैना बलकहै यामलमत अनुसार॥ अबकछु इच्छा प्रश्नकी सुनौसुकबि सरदार १६॥ अथ प्रश्न बिचार॥ दक्षिणस्वरकेईशहै श्रीसविताजगबन्द। बामबाह रजनीशको सुकवि कहत सानन्द १७॥ तोमर॥ जबप्रश्न पूँछैआइ। दिशिबाम ह्वै सुखपाइ॥ सुरबाम ताछिनहोइ। तब कहत पण्डितलोइ १८॥ घरजात सिगरेकाज। ह्वैहैतुम्हारेआज॥ रबिबाममें जो कोइ। कछुप्रश्नपूँछतहोइ १९ दिशिदाहिनीमेंआइ। तब यों-कहौ समुझाइ॥ हैकाजमें कछुहानि। बिनकष्टसिद्धि नजानि२० सुरहीनादिशिकीओर। जोकरतमनकीदौर॥ हैयदपिकरमेंअर्थ। नाहिंहोइ भरमैव्यर्थ २१ सुरदेखिकै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहिदेहु। यामें न कछुसंदेहु ॥ इहिभाँतिशिवमनमानि। सबकहतकोविद जानि २२ ॥ दोहा ॥ पूँछैकोउ आनिकै विषम वर्नरबिबाह॥ समअक्षरशशिसुरबहै जयपावैनर नाह२३बामदिशा तबजानियो सन्मुखपूछै आइ॥दक्षिण दिशि सबकहतहैं पूँछतपाछूजाइ २४ ॥ तोटक ॥ सुरऐंचत में जबप्रश्नकरै। तबकारजसिद्धि कहैंसिगरे ॥ सुररेचककाज नशावतहै। इहिभाँतिसबै कविगावतहै २५ परवाहदिशा थिरह्वैकरिकै। नरपूँछतप्रश्नहिपाँपरिकै ॥ सुतलाभसबैकविराजकहै। इहप्रश्नसबैसुखदाइकहै २६ पुनि नीरदिशामहँपूँछतवै। मरमैकरमैनलहैकछुवै ॥ इहि भाँतिसबै सुरप्रश्नलहै॥हितराजनिके कविराजकहै २७॥ अथरबिचन्दमाड़ीकहनकालैकर्तव्यतान्याह ॥ दंडक ॥ शशिसुरमाँझ शुभकाज कविराजकहै धरिउरमाँझ पुरमाँझजाइबसिबो। दीजैराजराजनिको बाजनिउड़ाइएजू नृपसोंमिलाप नयेधामनि पै धँसिबो ॥ मज्जनअसनन बिवाहमाहनरनाह शत्रुनिकेऊपर कृपानकटि कसिबो। बालमृग नैनिनसों रतिसुखदैनिनसों कोकिलानिकरिनीकी भाँति हँसिबो २८ ॥ अथद्रावणरतिबिधिमाह ॥ दोहा ॥ बामनाड़िका बामकीबहैतत्त्वजलमानि ॥ दक्षिणसुरपतिको बहै तत्त्वध नंजयजानि २९ पतिरति अतिहितसोंकरै ऐसो योग बिचारि॥वह्निमध्य नवनीत जिमि द्रवै मैनजलनारि३०॥ अथदम्पतिवशीकरण कर्त्तव्यतान्याह ॥ कवित्त ॥ सोवत में बाम बाम स्वरको प्रवाह बहै ताहि पति पानकरै दक्षिण प्रवाहते। होत बशनारी बिनदेखे अँधियारी प्यारी कैसे करिन्यारी रहै क्षणभरि नाहते ॥ शशि स्वर आपनेसों शशिमुखी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पानकरै प्रीतमको रविस्वर परम उछाहते। ऐसो प्राण प्यारी बश करत पियाको पीउ पानीनापियत बिनप्यारी की सलाहते ३१ ॥ पद्धटिका ॥ यह सुरति कामको समर जानि। सब रणबल यामहँ धरौ आनि ॥ याविधि बि-चारि करिरतिप्रसंग। सुधि भूलिजाति सबअंगअंग ३२ अथद्यूतविधि ॥ दोहा ॥ सुरछाया तम योगिनी भूबल सकल बिचारि॥तब जो जुवांको खेलिये होइ न कबहूंहारि. ३३॥ अथद्यूतमंत्रोद्धार: ॥ मालिनी ॥ गनि प्रणवकहीजै लाजकोबीज दीजै। रणपद पुनि कीजै और हुंकार लीजै॥ पुनिफट् अधिकारी अग्निकी चारुनारी। शिवमत अनुसारीमंत्र लीजोजुवाँरी ३४ (ॐ ह्रींरणहुंफट्स्वाहा)॥ इतिमन्त्रम् ॥ दोहा॥ दशहजार यामन्त्रजपि कीजोहोमविधान ॥ सुर भूसुरनि जिवाँइकै जीतो सकलसुजान ३५॥ इतिश्री महाराजकुमार श्रीअचलसिंहाज्ञयात्रिपाठीराजकृतेसम रविजये स्वररीतिवर्णननामपंचमप्रकाशः ५ ॥

अथास्त्रधारणान्यौषधान्याह ॥ दोहा॥ शुचिह्वै धारणकीजिये धाइ न खाइ शरीर ॥ शस्त्रनिवारण औषधी सुनो सु-मति रणधीर १ जे महीप धारणकरत शस्त्र निवारण मूरि ॥ तिनके अरिगण समरमें रहैं बिसूरि बिसूरि २॥ संयुता ॥ जरलीजिये तरुतालकी। शुभद्यौसमें ततकाल की॥ वहराखि आननमें चलै। तबजाइ अरिगण को दलै ३ खरजूरजर दलकेतकी। येलीजियेशुभ खेतकी॥ पुनि ताहि धरिकै शीशपै। चढ़ि चलिय शत्रुमहीशपै ४ उड़िजाइ अरि धरि अत्र इमि। ऋतुराज आगम पत्र जिमि५॥ दोहा ॥ येसब औषध घृतसहित भोजनकरै जु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोइ ॥ तीर न लगै शरीरमें जौलगि हजम न होइ ६ ॥
चौपाई ॥ कंसारी औ पांढ़ीमूरि। उत्तर दिशिको जरलै
तूरि ॥ विधिसों महा निशामें लीजै। तंदुलजल सँग
भोजन कीजै ७ जबलगि अंश उदरमें जगै। तबलगि
वाहि घाइ ना लगै ॥ अरिगण चकितहोइ अपनेचित।
कहे महेश साधुजनके हित ८ ॥ दोहा ॥ शरफोंका पुनि
लक्ष्मणा अंकोहरजर आनि ॥ मोरशिखा अहिलोचना
अपराजिता बखानि ९ ललितनील अरु पाटलावायस
जंघामूल ॥ सहदेई जर लीजिये जाके पियरेफूल १०
इनमें एको शीशमें मुखमें भुजमें राखि ॥ शस्त्र न लागै
समरमें अमरहोइ शिवभाखि ११ इनमेंएको औषधीजो
नर शुचिसों खाइ ॥ जौलौं पचत न उदरमें तौलौं लगै
न घाइ १२ ॥ अपरंच ॥ पीत कटैयाकी जर लीजै। पीत
काकनीमें भरिदीजै ॥ यैन मूंदि मुखमें जो राखौ। तौ
जयपदअतिशै अभिलाखौ १३ गोभीअकवड़ चकवड़
की जर। मोरशिखा धरि शीश विजैकर ॥ पुष्य अर्क
दिनजैये कानन। शुचिसों संगलीजिये आनन १४ करि
निमंत्र अभिमंत्रित कीजै। याप्रकार ये औषधलीजै १५
दोहा ॥ शिव भाषित ये औषधी राखौ अपने पास ॥ को
जानै जब चाहिये तब पैये अवकास १६ कहीयथामति
औषधी समर समै सुख देत ॥ कोटचक्र अब कहतहौं
अचलसिंह नृप हेत १७ ॥ अथकोटचक्रबिचारः ॥ दण्डक ॥
प्रथम नगरकोट ताकेमांझ नृपकोटकीजै चतुरस्र डौल
मध्यमेंमहलको। शहरपनाहवारेकोटकी सफीलपर धरि-
ये नक्षत्र ईश कोनमें अनलको ॥ ताते तीनितारा कोण
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गतहै प्रवेशी चारि पूरबकोनिकसै विचारि हलचलको।
तीनितीनि कोननि द्वै निकास दुर्गबलको १८ ॥ दोहा ॥

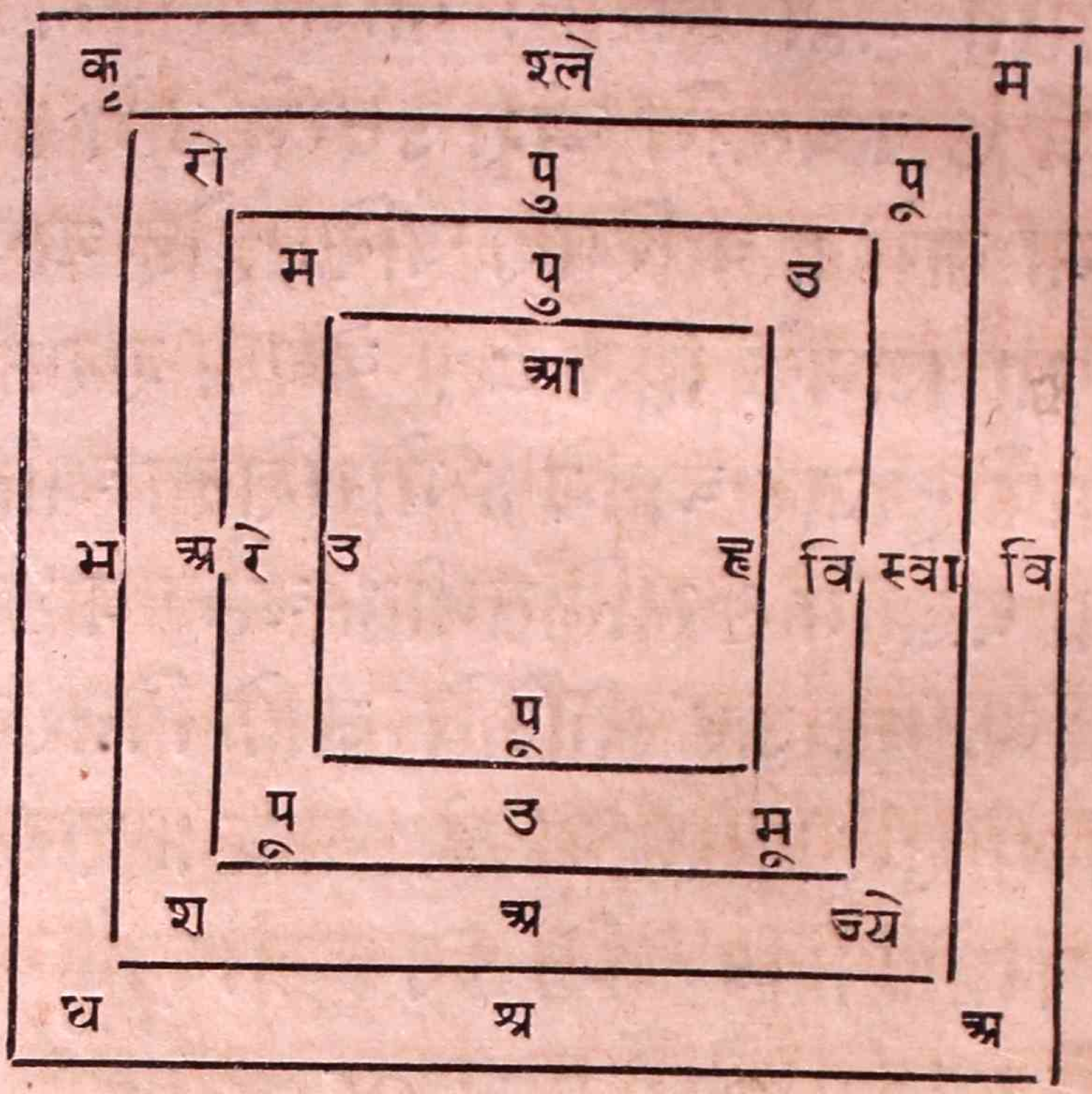

अट्ठाइस नक्षत्रधरि दुर्ग चक्रमें मित्र ॥ नवग्रह सहित बिचारिये कोविद परम पवित्र १६ ॥ दोधक ॥ कोटभकोट पालते तक्षण। कृत्तिकादि धरिबो उपलक्षण ॥ रव्या दिक खेचरधरि पंडित। कहै शुभाशुभ गुणगणमंडित २० ॥ कलहंस ॥ कोटभते गनि द्वादशलै रजनीशबधू धरि बाहिरे कोटमें। आठ नक्षत्रनि मध्यप्रकारमें आठ धरौ ग्रह अंत अगारमें ॥ शंभु कहै सब चारिनक्षत्रनि जे निशि बासर भीतर ओटमें। याविधि कोट विचार कहैं सिगरे गुणवन्त हथ्यारकी चोटमें २१ ॥ दोहा ॥ क्षीणचन्दरविमन्दतम भूसुतक्रूर बखानि ॥ बुध मिलि बैठे जासुसँग ताहीसों हितमानि २२ ॥ झूलना ॥ क्रूरग्रह अंतके भौनमें परतजब सौम्य सब बाहिरे कोट मानो। युद्ध अरि संग जे करत या योगमें होत गढ़भंग बिन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जंगजानो॥ युद्ध आरम्भ में साधुग्रहतंभ में पापखग कोटतजि करतथानो। कहतकविनाह अरिमारि वर-वाहसों कोटनरनाहकी जयबखानो २३॥ गीतिका॥ क्रूर खेचर अन्तमें अरुमध्यमें शुभखगपरै। होतआपुसमें बेगार अगार छूटत बिनलरै॥ आदि मध्यरु अन्तमें खगआइ मिश्रितजोपरै। होतयुद्ध समानजाके अधिक जनसो बलधरै २४॥ दोहा॥ क्रूरपरैग्रह मध्यमें अन्त शुभग्रहजानि॥ जाई जयपावैनहीं कहैगणक हितमानि २५॥ संयुता॥ ग्रहक्रूरमध्यप्रकारमै। शुभखेट प्रथम अ-गारमै॥ जबयोगयाबिधिआवई। अतिकष्टतेंगढ़पावई २६॥ सवैया॥ बाहिरकेगढ़में खलखेट रहैशुभमध्य प्र-कारहि जाइकै। खण्डितहोइ किला यहियोगमें छूटत नाहिं लरौकिनधाइकै॥ मध्यप्रकारमेंसाधुरहैखलबाहिर अन्तरहै सुखपाइकै। सन्तकहैंसिगरे इहियोगमें छूटत गर्ब दुहूनरनाइकै २७॥ मालिनी॥ खगलखियत योहैं क्रूर प्राकारमोहैं। शुभग्रह सबजोहैंबाहिरे अन्तसोहैं॥ समसमरहिजानौ योगयामेंबखानौ। प्रतिदिनगढ़भानौ खण्डखातेंसुजानौ २८ ग्रहजबसबतेहैं क्रूरअक्रूरजेहैं। करिसमरथकेहैं भूपदोऊभगेहैं॥ कैइहिबिधिजानौ संधि यामेंबखानौ। कहतकविसयानो भूपवेप्रीतिमानौ २९॥ विजया॥ शशिसूनु धरासुत सम्मतकै गढ़भीतरजाइ नि-वासकरै। जबजीवतपक्षहि पाइकलानिधिकोननक्षत्रनि में बिहरै॥ अकुलैगणमें घिरवाइकिला फिरिजाइचमू नजिकाइपरै। जयपाइ घेरैफिरिआवतहै इहिभाँति म-हीपति जाइलरै ३०॥ दोहा॥ जाइनृपति जयपदलहै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऐसेयोगहिपाइ। थाईकोबिपरीतकै दीजैगणकबताइ ३१ कविकुजगुरुबक्रीबुधौ जाहीदिशिमेंहोइ। ताहीदिशितें दुर्गको भंगकहै सबकोइ ३२ ॥ पद्धटिका ॥ जिहि दिशा कोटमें परतआनि। खलखग समेत द्विजराजजानि॥ तिहिओरकोटटूटतमवाशु।परसैन्यहोतपरवेशआशु ३३ ग्रहक्रूरथम्भमें बसतजोइ। तजिदुर्गदुर्गपतिजातहोइ॥ ग्रहकोटमध्यबक्रीअसाधु।गढ़भंगकरतयहकहैंसाधु ३४ दोहा ॥ जेनक्षत्रहैं कोटके बाहिरदिशिगतचारि॥ तिनमें बक्री क्रूरखग जहँतहँ भग्न बिचारि ३५ कोटमाँझ जे कोनगत नखतकहै कविराइ। तामें बक्री क्रूरग्रह जाई अजय बताइ ३६ ॥ अथकोटसुप्रजाग्रतविचारः ॥ दंडक ॥ जाई नरपाल आइ पूँछै ततकालशुभ दिनकेनक्षत्रतें बिचार पुनि कीजिये। कोटकेनक्षत्रलौंसमेटि एकठौरकीजै लीजै भागतीनिकोमुहूरतपतीजिये॥ विषमबचेतेकोट जागत है जनिजाउ समजोरहै तौयाप्रकार कहिदीजिये। जोट बाँधिकूदौ चोट तनको न आवैआजु सोवतहै कोटपालै धरिलीजिये ३७ ॥ अथान्यविचारप्रश्नचंडेश्वरमतेन ॥ गीतिका ॥ रिपुराशि अधिपति खेटसंयुत होइकोटभ जासमै। नीच ग्रहथितहोइकै पुनि शत्रु खेचर वासमै॥ जानि सोवत कोट ऐसे योग जोकरिपाइये। लीजियेवश आपनेकरि जात अरिधरिल्याइये ३८ उच्चखेचर युक्तकोटभमित्र सं-युत जोपरै। कोटपाल अधीश खगजत कोटिदोषनिको हरै॥ होइऐसोयोग जौलौं कोट तौलौं जगतहै। जानि तब मजबूतगढ़ पुरुहूत चढ़िनासकतहै ३९ ॥ दंडक ॥ गनो ततकालकोटपालके नक्षत्रतें जूकोटभंगजादिशामें

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोटचक्रधरिकै। ताहींदिशिजाईको बताइये निशंकह्वैकै करियेलराई कोटछूटंत छहरिकै॥ याहीभाँति सेनापति तारातेबढ़तदोष चक्रमेंनिहारिथाई लरैजोरकरिकै। सेनापतिकीजै औरजययशलीजैजाई थाईकोविचारकह्यो कोटचक्र भरिकै ४०॥ दोहा॥ कोटचक्र याबिधि कह्यो शिवमत अमित निहारि॥ कह्यहुसर्वतोभद्रअब लीजै सुमतिविचारि ४१॥ इतिश्रीमहाराजकुमारअचलसिंहाज्ञया तीर्थराजकृतेसमरविजये दुर्गचक्रवर्णनन्नामषष्ठमप्रकाशः ६॥

अथ सर्वतोभद्रप्रारभ्यते॥ दोहा॥ रेखा दशदश पांति नव पूरुब उत्तर खांचि॥ एकासी कोठानिको चक्रलीजिये बांचि १ ईश कोनते कोनगत सुरषोड़श धरिदेउ॥ अनलभते नक्षत्रसब चहूँदिशा भरिलेउ २॥ चौपाई॥ पूरबादि नखतनके तरे। धरिअवकहडा कोठनिपरे॥ दक्षिणदिशि मटपरता धरिये। पश्चिममें नयभजषाकरिये ३ उत्तरमें गसदचलादीजै। याप्रकार कोठाभरिलीजै ४॥ गीतिका॥ लग्नतीनिवृषादिदै कविकहत पूरबमें धरो। केशरीते तीनिलग्न प्रवीण दक्षिणमें करो॥ बारुणी दिशिमें रहै अलिराशिते धरि तीनिहै। कुम्भते भरितीनि उत्तर कहत सब प्राचीनहै ५ नन्दादिदै तिथि लिखिय पूरुब सहित रविकुज बारहै। भद्रासमन दिशिमें लिखौ सँगचन्दचन्द कुमारहै॥ जयायुतगुरु पासिदिशिमें दधनदरिकतशूकहै। शनिपूरनालिखिमध्य में सब कहत गणक अचूकहै ६॥ दोहा॥ सुन्दर शिव नक्षत्रते धङ्कावेधत आनि॥ हस्त नखतके बेधते षण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठाबेधहिजानि ७॥ सोरठा ॥ धफढावै धनिहारि बेधपूरवा षाढ़ते ॥ ऋयथ बेध निरधारि अहिर्बुध्न्य नक्षत्रते ८ ॥

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	डा	ऊ	म
अ	ल	लृ	२	३	४	लॄ	म	पू
रे	च	९	ओ	१ ६ सू ११ मं	औ	५	८	अ
उ	द	१२	४ ९ १४ शु	५ १० १५ श	३ ८ १२ च बु	६	प	स्वि
पू	स	११	अः	३ ८ १३ बृ	अं	७	र	चि
श	ग	ऐ	१०	९	८	ए	त	स्व
ध	ख	ष	ज	भ	य	न	ऋ	वि
ई	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

दोहा ॥ भरणी बेधत सुरबिधे अकारादिकहि चारि॥ तिथिबेधतहैं पूरणा लीजोसुमति बिचारि ९ ॥ तारका ॥ ग्रह क्रूरबिधे दुखदाइकहैं ॥ ग्रहसाधुबिधे सबलाइकहैं १० ॥ गीतिका ॥ निजपाछिली दिशिबक्र खेचर कोनगत बेधत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सबै। शुद्धमारग चलत खेचर बेधसनमुख कहितबै ॥ यहराहुकेत समेत निशिदिन गनकसाधत चक्रहैं। रजनीश रविगति शुद्धजानहु चलत नाहीं बक्रहैं ११ ॥

दंडक ॥ जानतसकल कविपण्डित बिचारिकहैं बिनाबर्ण बेधाको न धनको घटावतो। कोनोना भ्रमत बिनाजन्म नखतबेध बिना तिथिबेधको न भयको बतावतो॥ बिना राशि बेधको न बिघन मँझावतो जूबिना बिना सुखेध कौन बेदनिबुलावतो। रच्योहै प्रपंच भवसागर बिरंचि जूने बिना पंचबेधै यमराजैको जुहारतो १२ ॥ दोहा ॥

बुद्ध बेधते बुधिबढ़त जीवबेध सुखदेत ॥ शुक्रबेधते रति लहत कहतगनक शिरनेत १३ शुभग्रह बक्री होत जब होत अधिकफलजानि ॥ क्रूरग्रह बक्रीभये अशुभफलनि की खानि १४ ॥ गीतिका ॥ जेहिराशिके रविहोइ सो दिशि अस्त पंडित कहतहैं । तिथि बार वर्णसमेत नखतनि राशि सुरयुत लहतहैं ॥ विदिशानिमें सुलिखेते सब दिशनिमें ठहराइये। दिशिईश पूरुबमेंगनो सुरअस्त याविधिपाइये १५ ॥ दोहा ॥ अस्तदिशामें क्रूरग्रह होत अशुभफलदानि ॥ उदितदिशामें साधुग्रह शुभफलदेत बखानि १६ ॥ गीतिका ॥ जन्मउड़गण बेधकोविद कलहकारी कहत हैं। दशमतारा बेधते शुभकाज सिद्धि न लहतहैं ॥ होतभारी सोरहों धननाश नखत अठारहैं। तेईसवों उड़रोग देत पचीसवों सुखनाशहै १७॥ दोहा ॥ नगरनखतकेबेधते भगरहोतनृपभीति॥ चक्रसर्वतोभद्र यह कहैंगनककरिप्रीति १८ ॥ इतिसर्वतोभद्रचक्रम् ॥ अथसूर्यकालानलचक्रम् ॥ दोहा॥ रेखाऊरधतीनिकै तिरछीकीजैतीन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दुहुंकोननिमेंधरो पण्डितकहतप्रवीन १९ पूरबदिशिरे-
खानिमें कीजै तीनि त्रिशूल ॥ अग्निईश दिशिमध्यमें
शृंगनिको निजभूल २० सूरजकालानलकह्यो याप्रकार
लिखिलेउ ॥ मध्यशूलके दण्डशर रविताराधरिदेउ २१
दक्षिणमारगह्वैचलौ जहाँपरैनिजभानि ॥ रणप्रयाणग
दवादमें याहिलीजियेमानि २२ रेखातीनित्रिशूलकी तात
रताराहोइ ॥ चिंताबधबन्धनकरै यहजानोसबकोइ २३
कष्टदेइशृंगनिबिषे मृत्युशूलपरलेखि ॥ औरठौरजयपा-

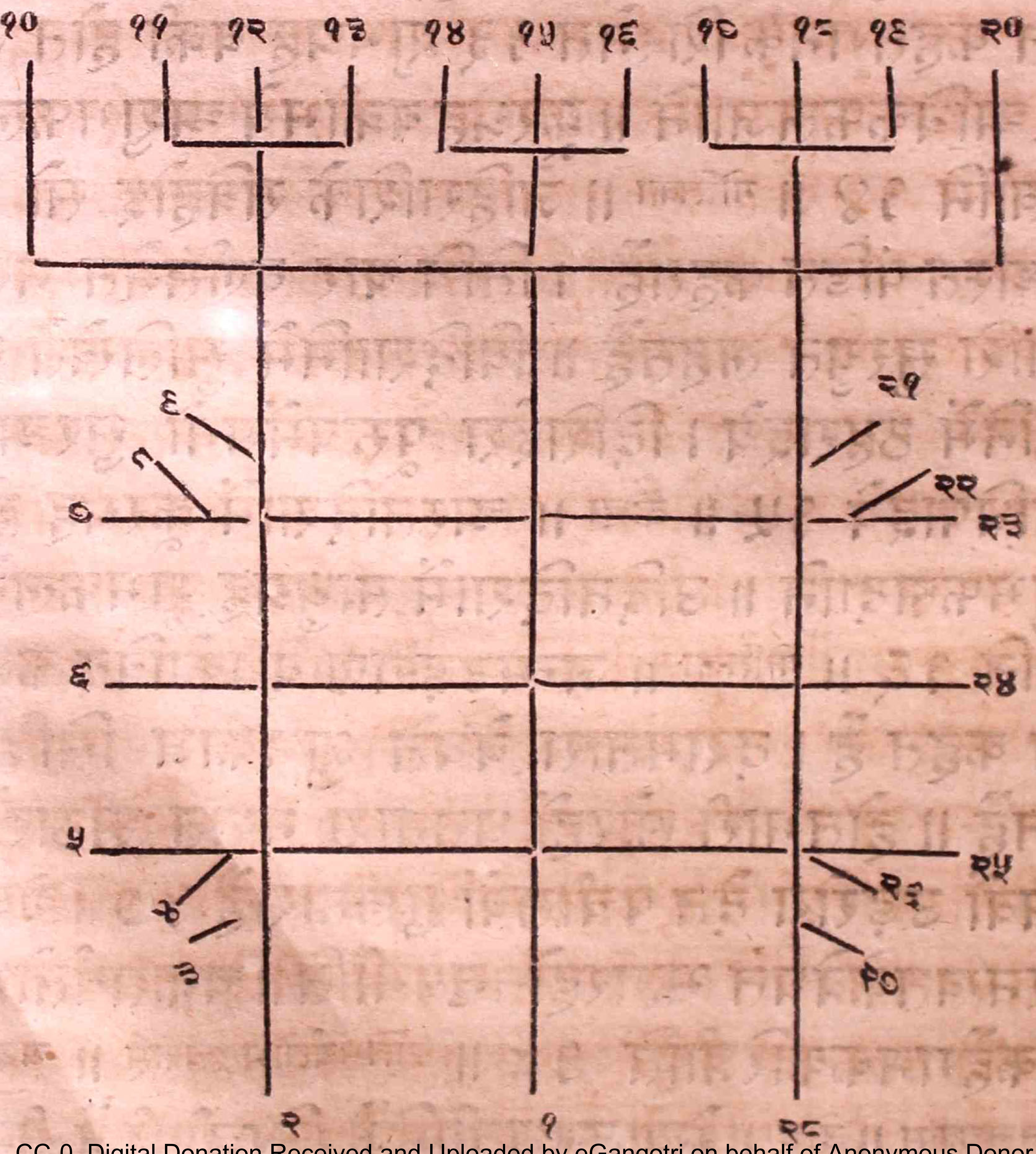

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इये सम्पतिलाभविशेखि २४ ॥ अथचन्द्रकालानलचक्रम् ॥ दंडक ॥

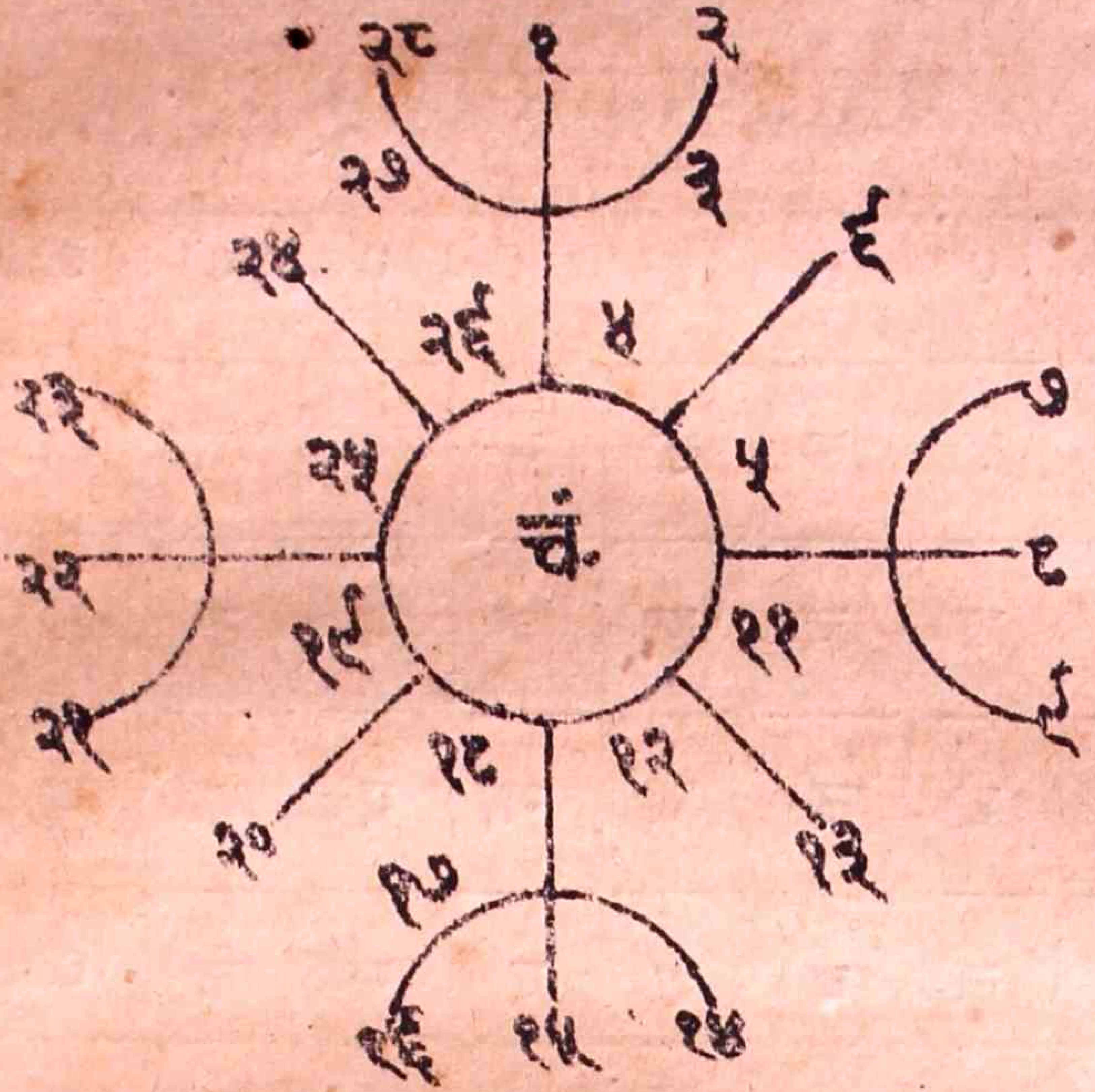

प्रथमप्रकारपूरि पूरबादिक कुम्भनिमें लिखिये त्रिशूल
चारिसुन्दरफनीशको । तातेंसव्यमारगमें तीनितीनिधरौ
अंक कोननिमेंएकएक रेखाखैंचिदीजैधरौ पूरुबत्रिशूल
मध्यताराराजनीशको ॥ तातेंसव्यमारगमेंतीनितीनिधरौ
कोननिमें चारिचारि विचारि सुबीशको । नीकी भाँति
याकेफलादेशहि विचारिकहौ चक्रचन्द्रकालाकहै कोविद
गिरीशको २५ ॥ दोहा ॥ जबजबहोइ त्रिशूलपर जन्म
नखतकोबास ॥ कविकोविदसबकहतहैं कष्टदेइअनयास
२६ ॥ अथऋणधनशोधन ॥ तिरछीग्यारहकीजिये ऊरधकोठा
पाँच ॥ पचपनकोठाचक्रके कहैसुकविवरसाँच २७ प्रथम
पाँति एकङ्कधरि रसरसदरशबखानि ॥ नभगुणसागर
वेदनभ नभनभरामैजानि २८ इनअंकनितरसुरलिखौ
अवलीभरिकरिप्रीति ॥ अक्षरखण्डविसर्गबिन यहैचक्र
कीरीति २९ ककारादिसबवर्णलैअवलीभरियेतीनि ॥ सा-
ध्यनामको चक्रयह कहतगणकप्राचीन ३० ॥ अथसाध्यांक
चक्रम ॥ कोठाओईजानिये ऊपरअङ्कनिफेरि ॥ तेनिशंक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कैकहतहौं अंकलीजियेहेरि ३१ दृगयुगशरनभखखधरा

अथसाध्यनामचक्रम् ॥

६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३	अक
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	स्वर
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	वर्ण
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	वर्ण
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०	वर्ण

नभयुगसागरराम ॥ लिखियेपूरबरीतिसब साधकचक्र सकाम३२ ॥ सोरठा ॥ निजनिजनामानिशंक अपनेअपने

२	४	५	०	०	०	१	०	४	४	३	अंक
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	स्वर
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	वर्ण
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	वर्ण
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०	वर्ण

चक्रमें॥ इकठौरैकरिअंकसुरबर्णनिकोजोरिकै३३ दोऊअ कनिमाह भागलीजियेआठको ॥ अणीकहैकाविनाह हीन अंकजाकोबचै३४॥ दोहा॥ श्रीगुलाबसिख्यादिदैसाध्यवि विधप्रकार॥पतिस्वामीगुरुगनतहैसाधककहैअपार ३५ अथरोगोदूतसाध्यासाध्यविचार: ॥ वाहिभांतिवह चक्रलिखिलीजै वोइवर्णतामेंअंकधरौयेनिशंकसुखुपाइकै। रसगुनलोचन उदधिनगतर्कवेद रामचंदनभभूमि देतुहैबताइकै ॥ दूत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अरुरोगीके निरारेनाम अंकधरैभागहैराआठकौ बता
वौसमुझाइकै॥दूतकेअधिकरहैरोगीना।जियतजियेरोगी

६	३	२	४	७	६	४	३	५	०	१	अंक
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	स्वर
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	वर्ग
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	वर्ग
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०	वर्ग

जोअधिकहोइ लीजैअजमाइकै३६॥ अन्यच्च॥ प्रश्नकेसुरं
कवर्ण अंकलेउतीनिकै। एकजोरिदूनकैसुभागलेउतीनि
कै॥ एकशेषजोबचै बताइयेअरोगहोइ द्वैरहैत्रिचारिरोग
शेषशुन्यसोगहै३७॥ दोहा॥ सेवकस्वामीकेसुखद ऋण
धनकैहैनिनार ॥ आगममत अबकहतहौं छायापुरुष
बिचार ३८॥ अथभविष्यदर्शसूचकछायापुरुषदर्शनप्रकारः॥ दोहा॥
द्वैपवित्रऋतुशरदमें जबपूरनरजनीश । लखियेछायापु
रुषकोकहेकबिनकेईश ३९बड़ेभोरउठिदेखियैरविदिशि
पीछेडारि ॥ निजपरछाहींमेंसुमति अनमिषग्रीवनिहारि
४० कछुककालबीतेबहुरि नभमण्डलकोताकि ॥ श्वेत
पुरुषलखियैजबै कहैगनकफलहाकि ४१ ॥ चंद्रकला ॥
बिनकाननआननदेखिपरै तबजानहुँद्वादशबर्षजियै । त्रि
न अंशलखै नर उज्जलकौ सम सप्तममें यमलोकछियै॥
करहीन प्रवीण लखै जबहीं दशवर्षजियै बहुयत्नकियै।
बिनआनन देखिपरै इकवर्षजियै न सुधा किन होइपियै
४२॥ दोहा॥ छायापुरुषहिदेखिये पाइर्वहृदयाबिनहोइ॥

वर्षतीनिह्वै जीवई कहै गनक सब कोइ ४३ ॥ रूपमाला ॥
बिनशीशका नरदेखिये तबजीजिये षटमास। उरमांझ
रंध्र निहारिये पलसातयें यमपास॥ लखि देह ह्वै वा
पुरुषकी निजमरणहै अनयास। लखि अंगपूरण मरण
को वावर्षमें नहिंत्रास ४४ ॥ दण्डक ॥ न्हातमेंप्रथमजल
काननिको सूखै तब बारहीं बरस जाइ अंतक समाज
को। सप्तवर्ष आयुगनो कंधजल सूखिगये करसूखेदश
वर्ष करिले इलाजको॥ पांजर सुखाने समतीनि जिवै
मुखपुनि वर्ष भरि करिवले कछूक शुभकाजको। और
अंग भीजै एक हृदय सुखाइ तब षटमासमें सतावै यम
राजको ४५ ॥ अन्यच्च ॥ चौ० ॥ निजशिरपर कराखि इंद्र
जव जे अवलोकै। देखि न परत बनाइ जाइँतेनर यम
लोकै॥ भव विलास तजिआश मासषट जीवनजानो।
याविधिसबैबिचारिकहत मुनिबरउरआनो४६॥ अन्यमत॥
संयुता॥ कर उभय सम्पुट जोरिकै। निज शीश धरिय
बहोरिकै॥ करअन्तराल निहारिये। बिन आयु तब
निरधारिये ४७ जब कदलि कलिकासीरहै। तब आयु
पूरण शिव कहै॥ जलमांझ परत न जानिये। निजशुक्र
मृत्यु न मानिये ४८ ॥ दोहा ॥ इन चिह्ननिको देखिकै
कीजै समर सुजान। गरगादिक मुनि कहतहैं कीजै
बचन प्रमान ४९ मुख्य चिह्न निजदेहके जानो जीवन
अर्थ॥ काक शिवादिक वचनको निशिदिन भरमै व्यर्थ
५० समरसार भाषाकस्यो समरविजय सुखदेत॥ धर-
मधुरंधरजानिकै अचलसिंहनृपहेत५१॥ कवित्त॥ जौलौं
कामतरुकीउदारता बखानेकबि जोलोंभवसागरमें की

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रतिसोहातीहै। जौलौंपंचतत्त्वहैं विधाताके अखिलधनु जौलौंकमलाकी कलाकलिमें अवातीहै॥ जौलौंधाम धामरामराम सबकोऊकहै जौलौंबामअंगभवकेविभाती है। तौलौंश्रीअचलसिंहधरणीमें राजकरौधरमधुरंधरपुरं दरकोनातीहै ५२ धारियैभूपतिनमें समुद्रकलानिधि श्री मुखअंकनिकारियै। कारियैआठगुनौ पुनिताहिसुरंकते लक्षनिहूंलौं बिचारियै। चारियैजोरिकै तीसगुनौ करि राजकहै सुकलानिसों तारियै। तारियैशेषतिथीनिसों श्रीअचलेशकी आयुसमानिरधारियै ५३॥

इतिश्रीमहाराजकुमारअचलसिंहाज्ञयातीर्थ-
राजकृतेसमरविजयेछायापुरुषदर्शनंनाम
सप्तमःप्रकाशः ७॥

लखनऊ मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ानेमें छपा
जून सन् १८९३ ई०॥

हक़तसनीफ़ महफ़ूज़है बहक़ इस छापेख़ानेके॥

२ जुज ५ वर्क़

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor